International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 06-06-2022, Accepted: 23-06-2022, Published: 09-07-2022
Volume 8, Issue 4, 2022, Page No. 17-20

हिन्दी काव्य में बिम्ब के सशक्त हस्ताक्षर–डॉ० केदारनाथ सिंह

प्रवीन भारद्वाज
हिन्दी शोधार्थी, रबीन्द्रनाथ टैंगोर विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
काव्य साहित्य में 'बिम्ब' अंग्रेजी के 'इमेज' शब्द का पर्याय माना जाता है जो पश्चिम में अंग्रेजी कवि टी.ई.ह्यूम के द्वारा एक काव्यान्दोलन के रूप में स्थापित हुआ और बिम्बवाद की इस नवीन अवधारणा से प्रभावित हो कर इंग्लैण्ड और अमेरिका के कतिपय कवियों यथा ऐमी लॉवेल, एज़रा पाउण्ड और रिचर्ड एल्डिंगटन इत्यादि ने बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में 'बिम्बवाद' के सिद्धान्तों को अपनाया और उनका प्रतिपादन किया। यूँ तो हमारे प्राचीन साहित्य में, विशेषकर संस्कृत साहित्य में भी प्रतीकों और बिम्बों का प्रचुर उपयोग होता रहा है किन्तु इसे काव्य की 'आत्मा' या 'प्राण' के रूप में स्वतन्त्रता के कुछ वर्ष पूर्व और बाद में छायावादी कवियों ने अपनाया और इसके चित्रत्व को स्वीकार किया। वैसे तो 'बिम्ब' का हिन्दी में प्रयोग सर्वप्रथम आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने किया और माना कि 'काव्य में अर्थग्रहण मात्र से काम नहीं चलता, बिम्ब ग्रहण अपेक्षित होता है', किन्तु डॉ. केदारनाथ सिंह ने बिम्ब को काव्य के मूल्यांकन हेतु एक विशिष्ट मापदण्ड के रूप में न केवल स्थापित किया अपितु अपने आरंभिक काव्य संग्रहों यथा 'तीसरा सप्तक (1959) अभी बिल्कुल अभी (1960) जमीन पक रही है (1980) इत्यादि में बिम्ब–विधान का सार्थक एवम् सफल प्रयोग किया।
बिम्ब–विधान पर सर्वप्रथम विस्तृत और सुव्यवस्थित रूप से अध्ययन करने का श्रेय उनकी पुस्तक 'आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब–विधान' (1971) को जाता है। डॉ० केदारनाथ सिंह हिन्दी काव्य में बिम्ब को स्थापित और वैज्ञानिक ढंग से प्रयोग करने वाले सशक्त हस्ताक्षरों में अग्रगण्य हैं

मूल शब्दः बिम्ब विधान, चित्र भाषा, ऐन्द्रिय बिम्ब, मूर्त, अमूर्त, प्रतिच्छाया, इन्द्रिय जनित, अवधारणा, इमेजियम, चित्र विधान।

प्रस्तावना
बिम्ब का इतिहास हिन्दी काव्य में बहुत प्राचीन तो नहीं कहा जा सका क्यूँकि बिम्ब की अवधारणा का जन्म और विकास पश्चिम में 'इमेज' के रूप में हुआ और इन देशों में यह 'इमेजियम' नाम से एक साहित्यिक आन्दोलन के रूप में प्रसिद्ध हुआ। अंग्रेजी के रोमांटिक कवियों ने इसे विशेष रूप से ग्रहण किया और अपने दृष्टि, श्रवण, प्राण, स्पर्श और रसना के लिए किसी न किसी रूप में काव्य की इन्द्रियजनित अनुभूति के रूप में स्वीकार किया। सी०डी० लेविस 'काव्य–बिम्ब' को एक प्रकार का 'भावगर्भित चित्र' मानते हैं और टी०एस० इलियट ने बिम्ब को 'आब्जेक्टिव कोरिलेटिव' कहा है। क्यूँकि हिन्दी काव्य में 'बिम्ब' मौलिक शब्द न होकर 'इमेज' का पर्याय ही है तो अगर सुमित्रानन्दन पंत बिम्बविधान को 'चित्रभाषा' और महादेवी वर्मा 'भावनाओं का चित्रण' मानते हैं तो आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, जिन्होंने प्रथम बार बिम्ब का प्रयोग किया उचित ही कहते हैं कि 'बिना बिम्ब ग्रहण के अर्थ ग्रहण हो ही नहीं सकता'। (चिन्तामणि–प्रथम भाग)
आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब विधान का सबसे सटीक और वैज्ञानिक अध्ययन एवम् सार्थक प्रयोग करने वाले डॉ० केदारनाथ सिंह है। 1989 में 'साहित्य अकादमी सम्मान' और 2013 में प्रतिष्ठित भारतीय ज्ञानपीठ सम्मान का सुयश प्राप्त करने वाले समकालीन हिन्दी कविता के एक महत्वपूर्ण नाम डॉ० केदारनाथ सिंह किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। 'तीसरा सप्तक' (1959) से लेकर सृष्टि पर पहरा (2014) तक उनका काव्य–आकाश बहुत विस्तृत एवं व्यापक है। उन्होने समकालीन कविता के यश और गाह्यता की अभिवृद्धि हेतु न केवल नए प्रतिमान गढ़े अपितु हिन्दी कविता में बिम्ब विधान को स्थापित करने का महती कार्य किया। हिन्दी कविता में बिम्ब विधान की परिकल्पना डॉ० केदारनाथ सिंह के बिना न आरम्भ होती है और न समाप्त। हालाँकि यह भी सत्य है कि अस्सी के दशक के बाद जब सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियाँ परिवर्तित हुई तो कविता के नए कलेवर में जब बिम्ब का प्रयोग अनावश्यक भार के रूप में प्रतीत होने लगा तो डॉ० सिंह पर भी इसका प्रभाव हुआ और उनके बाद के काव्य–संग्रहों में बिम्बवाद की प्रतिच्छाया अल्प ही दृष्टिगोचर होने लगी परन्तु छठे दशक से पहले और कुछ वर्ष बाद तक भी बिम्ब ने हिन्दी कविता को समग्र रूप से प्रभावित किया और इस विशिष्ट कार्य के प्रतिपादन में डॉ० सिंह का नाम अग्रगण्य है।

डॉ० सिंह के बिम्ब विधान का विस्तृत नभ
यह सत्य है कि हालाँकि छायावादी कवियों ने बिम्ब को 'चित्रभाषा' 'भावनाओं का चित्रण' इत्यादि उद्बोधनों से संबोधित किया और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने बिम्ब विधान को 'चित्र विधान' के रूप में वर्णित किया, किन्तु डॉ० केदारनाथ सिंह ने बिम्बवाद की स्पष्ट और वैज्ञानिक ढंग से न केवल व्याख्या की अपितु इनका अपने प्रथम दो तीन संग्रहों में प्रचुर प्रयोग भी किया। ऐन्द्रिक बिम्बों के जिन विषयों उपविषयों का प्रयोग डॉ० सिंह ने अपने काव्य में किया उनके कुछ उदाहरण निम्न हैं।

चाक्षुष बिम्ब

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं 'अन्य विषयों की अपेक्षा नेत्रों के विषय का ही सबसे अधिक आनयन होता है। और सब विषय गौण रूप में आते हैं'। (चिन्तामणि–भाग 2 पृष्ठ 11) डॉ० केदारनाथ सिंह के काव्य में दृष्ट बिम्ब के कुछ सुन्दर उदाहरण है।

शरद तुम्हारे खेतों में सोना बरसाये
छज्जों पर लौकियाँ चढ़ाये
टहनी–टहनी फूल लगाऐ
पत्ती–पत्ती ओस चुआऐ
मेड़ों–मेड़ों दूब उगाए
शरद तुम्हारे बालों में गुलाब उलझाये
(तीसरा सप्तक पृ– 13)

मुझे टमाटरों की रौशनी में
उसका लहकता हुआ चेहरा दिखाई पड़ता है
यह माँ का चेहरा है– मैं खुद कहता हूँ
मुझे गोर्की की 'माँ' बेहतर याद आ रही है
(ज़मीन पक रही है पृ–32)

घ्राणिक बिम्ब

यूँ घ्राणिक बिम्बों का प्रयोग हिन्दी काव्य में कम ही हुआ है परन्तु डॉ० सिंह ने काव्य में घ्राणिक बिम्ब के अनेक सुन्दर चित्र उकेरे हैं–

पकते घानों से महकी मिट्टी
फसलों के घर पहली थाप पड़ी
(कविता– कुहासा उठा, संग्रह–अकाल में सारण पृ–27)

जहाँ वर्षा शुरू होती है 3
एक बहुत पुरानी सी खनिज गंध
सार्वजनिक भवनों से निकलती है
और सारे शहर पर छा जाती है
(कविता जब वर्षा शुरू होती है, संग्रह–जमीन पक रही है पृ–26)

श्रावण बिम्ब

संगीत यन्त्रों से फूटती स्वर लहरियाँ, पक्षियों के कलरव, पायल या घुँघरू की झंकार को अभिलक्षित करता यह बिंब डॉ० सिंह के काव्य में अनेकानेक बार प्रयुक्त होता है

''बड़ी हो गई कटु कानों को
'चुर–मुर' ध्वनि बाँसों के वन में
(कविता–दुपहरिया, संग्रह–तीसरा सप्तक, पृ–123)

''झर झर झर
झरती हैं पत्तियाँ सवेरे से
आज हवा पागल है
(कविता–मार्च की सुबह, संग्रह–अभी, बिलकुल अभी, पृ–41)

रासनिक बिम्ब

जिह्वा से संबंध रखने वाले इस बिम्ब को आस्वाद बिम्ब भी कहा जाता है। कभी यह सांकेतिक रूप में प्रयुक्त होता है और कभी स्पष्ट। डॉ० केदारनाथ सिंह रासनिक बिम्ब का प्रयोग भी खूब करते हैं–

''मैनें जब भी उसे तोड़ा है
मुझे हर बार वह पहले से ज्यादा स्वादिष्ट लगी है
पहले से ज्यादा गोल
और खूबसूरत
पहले से ज्यादा सुर्ख और पकी हुई
(कविता–रोटी, संग्रह–जमीन पक रही है, पृ–24)

स्पर्शिक बिम्ब

त्वचा के माध्यम से स्पर्श करने के भाव को प्रकट करने के लिए इस बिम्ब का प्रयोग 'छायावाद' और 'नई कविता' के युग के कवियों ने प्रचुर मात्रा में किया तो डॉ० सिंह कैसे पीछे रहते? कतिपय उदाहरण निम्न हैं–

'शाखों पर जमे धूप के फाहे
गिरते पत्तों से पल ऊब गए

हाँक दी खुलेपन ने फिर मुझको
डहरों के डाक कहीं डूब गए
(कविता–कुहरा उठा, संग्रह–तीसरा सप्तक, पृ–130)

''स्पर्श हाथों का नया
या सर्द पानी सी छुअन निस्संग
लाओगे! क्या लाओगे!
(कविता–नव वर्ष के प्रति, संग्रह–अभी, बिल्कुल अभी, पृ–65)

काव्य संग्रहों में प्रयुक्त कुछ अन्य बिम्ब

तीसरा सप्तकः इस संग्रह की बहुत सी कविताओं में डॉ० सिंह ने मूर्त और अमूर्त बिम्बों का प्रयोग अनेक बार किया है। बिम्बों के माध्यम से सुकोमल भावनाओं का चित्रण करके कवि ने अनेक भाव चित्र प्रस्तुत किए हैं। अपने प्रिय की प्रतीक्षा में प्रिया रात भर विचार मग्न रहते हुए भावनाओं का ताना–बाना बुनती रहती है–
आँखड़िया पगली की
नींद हुई चोर की
पलकों तक आ आ कर
बाढ़ रूकी लोर की
रह रहकर खिड़की का पल्ला उढ़का दिया
(कविता–रात, पृ–129)

अभी, बिल्कुल अभीः इस काव्य संग्रह का रचनाकाल क्यूँकि तीसरा सप्तक के आस पास ही है अतः इस संग्रह के बिम्बों और भावों में कुछ विशेष अन्तर दृष्टिगोचर नहीं होता। उदाहरणार्थ एक छोटे बच्चे के माध्यम से कवि अपनी अकुलाहट का बिम्ब 'एक परिवारिक प्रश्न' नामक कविता में कितने सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करते हैं–
मुठी में प्रश्न लिए
दौड़ रहा हूँ बन बन
पर्वत पर्वत
रेती–रेती
लाचार (पृ–26)

ज़मीन पक रही हैः इस काव्य संग्रह में डॉ० सिंह के बिम्ब हमारे दिन–प्रतिदिन में होने वाली घटनाओं को स्पर्श करते हैं जो मन को कहीं अधिक वास्तविकता से छू कर निकल जाते हैं–
लाल बुरादे की ठंडी खुशबू (कविता–जमीन, पृ–11)
पहले आदमी से भी बहुत पहले चुपचाप बहने वाली पतली सी नदी
(कविता–बिना नाम की नदी, पृ–16)

स्त्री के कन्धों से झनकर पड़ने वाली हल्की सी धूप
(कविता–एक प्रेम कविता को पढ़कर, पृ–51)

सूर्यास्त के समय सूर्य को लम्बी और सफेद दाढ़ी लगाए हुए देखना
(कविता–सूर्यास्त, पृ–64)

यहाँ से देखोः यह काव्य संग्रह डॉ० केदारनाथ सिंह के अनेक नए प्रयोगवादी और प्रभावशाली बिम्बों के लिए जाना जाता है। कतिपय उदाहरण निम्न हैं–
''घाट का आखिरी मुलायम पत्थर
भिखारियों के कटोरों का खालीपन
और खाली कटोरों में बसन्त का उतरना(कविता–बनारस, पृ–20–21)
''बाहर भीतर बारिश देखता नमक का ढेला (कविता–सम्पादक के नाम पत्र, पृ–61)

अकाल में सारसः इस काव्य संग्रह में हालाँकि कवि का बिम्बों के प्रति उतना अधिक झुकाव नही है परन्तु फिर भी आत्मा से बिम्बवादी कवि होने के कारण डॉ० सिंह का यह संग्रह भी कुछ नवीन और कुछ अनुभव आधारित बिम्बों से सुसज्जित है–
चुप रहने से अकड़ती हुई जीभ और दुखती आत्मा
(कविता–मातृभाषा, पृ–11)

शीशे के बिखरे टुकड़े के बीच एक हरी पत्ती
(कविता–अकाल के डूब, पृ–21)

उपलों से छनती हुई फूलों की खुशबू

(कविता–घुलते हुए, गलते हुए, पृ–49)

चटक रंगों वाला रोयेंदार शब्द
(कविता–ठण्ड में नहीं मरते शब्द, पृ–104)

डॉ० केदारनाथ सिंह की 'तीसरा सप्तक' से 'अकाल में सारस' तक की लम्बी काव्य यात्रा में बिम्बों के प्रति उनके आकर्षण और आस्था में भी परिवर्तन होते गए और जहाँ पहले के संग्रहों में बिम्ब और उनके सुन्दर और सार्थक प्रयोग प्रचुर मात्रा में पाए गए वहीं उनकी परवर्ती रचनाओं में बिम्ब प्रथमतः उतनी अधिक मात्रा में नहीं मिलते, दूसरे, कवि ने बाद के संग्रहों में अपने निजी अनुभवों और संवेदनाओं के आधार पर भारत के रोज़मर्रा के जीवन से कुछ नए बिम्ब गढ़े और इन सशक्त बिम्बों के माध्यम से अपने काव्य लोक को और अधिक प्रकाशमान और सार्थक बनाया।
संक्षेप में कहा जाए तो जब भी भारतीय काव्यधारा में बिम्बवाद की बात की जाऐगी तो डॉ० केदारनाथ सिंह और बिम्ब के प्रति उनकी आसक्ति, आस्था और अनुराग का वर्णन भी किया जाएगा, जिनके बिना हिन्दी साहित्य में बिम्बवाद की कल्पना भी नहीं की जा सकती।
डॉ० सिंह स्वयं 'तीसरा सप्तक' में लिखते हैं– (पृ–116)
''एक आधुनिक कवि की श्रेष्ठता की परीक्षा उसके द्वारा आविष्कृत बिम्बों के आधार पर ही की जा सकती है उसकी विशिष्टता और उसकी आधुनिकता सबसे अधिक उसके बिम्बों में ही व्यक्त होती है।''

संदर्भ ग्रन्थ

1. तीसरा सप्तक, अज्ञेय (संपादक)– 1959, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी
2. चिन्तामणि (भाग–2)– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, जतनवर सरस्वती मंदिर, काशी
3. काव्य बिम्ब– स्वरूप और प्रकार– डॉ० नगेन्द्र (नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली)
4. आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब विधान– डॉ० केदारनाथ सिंह (भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली)
5. सौंदर्य शास्त्र के तत्व– कुमार विमल (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)
6. कविता के नए प्रतिमान– डॉ० नामवर सिंह (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)
7. समकालीन हिन्दी कविता– पं० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)
8. आधुनिक हिन्दी कविता में शिल्प– कैलाश वाजपेयी (आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली)
9. डॉ. केदार नाथ सिंह के काव्य संग्रह ''अभी बिल्कुल अभी जमीन पक रही है यहाँ से देखा अकाल में सारस''
10. इ लिंक – hi-mi-Wikipedia-org.